

# डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 29, ईसा। 60-62

## © 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 29, यशायाह अध्याय 60 से 62 है।

आप में से जो लोग पिछले सप्ताह यहां थे, हमने पुस्तक के इस अंतिम खंड की दिलचस्प संरचना के बारे में बात की, जिसे मैंने धार्मिकता, दासत्व का चरित्र कहा है। धार्मिकता, सेवकत्व का चरित्र। और हम इसे इस प्रकार की सीढ़ीनुमा संरचना में व्यवस्थित देखते हैं। जहां सीढ़ी के दोनों छोर समानांतर हैं और प्रत्येक सीढ़ी तब तक समानांतर है जब तक हम त्रिभुज के शीर्ष, सीढ़ी के शीर्ष पर नहीं आते हैं, और उस खंड के समानांतर कोई नहीं है, वह स्वयं ही खड़ा है।

हमने पिछले सप्ताह इस बारे में बात की थी कि ऐसा क्यों हो सकता है। यशायाह ने ऐसा क्यों किया होगा? वह वही बातें बार-बार, कुछ हद तक उलटकर क्यों कहेंगे? और मैंने आपको सुझाव दिया कि इस प्रकार की संरचना का मूल्य यह है कि यह हमें उस चीज़ के महत्व की याद दिलाती है जिसके बारे में हम यहां हैं। सेवकाई का लक्ष्य क्या है? और सेवकाई का लक्ष्य यह है कि सारी दुनिया आकर परमेश्वर की आराधना कर सके।

इज़राइल के पुरोहिती का लक्ष्य यह है कि वे शेष विश्व के लिए मध्यस्थ बन सकें। और इसलिए, यदि हमारे पास केवल इतना ही होता, तो इस अद्भुत चरम बिंदु पर पहुंचते-पहुंचते हम लक्ष्य भूल सकते हैं। लेकिन हम चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं और फिर हमें न केवल यह याद दिलाया जाता है कि लक्ष्य क्या है, बल्कि मुद्दे क्या हैं।

अध्याय 40 से 55, हम अनुग्रह से बचाए गए हैं। हमें कुछ नहीं करना था; किसी पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है। हम बस भगवान के चुने हुए सेवक हैं।

क्यों? इब्राहीम से किए गए मेरे वादे के कारण, यही कारण है। तो, फिर, इससे वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कैसे रहते हैं? और अध्याय 56 से 66 कह रहे हैं, अरे हाँ, ऐसा होता है। और वास्तविक तरीके से, जैसा कि हमने पिछले सप्ताह देखा, यहां जो हो रहा है वह यह है कि जैसे अध्याय 40 से 55 में मुक्ति अनुग्रह से थी, वैसे ही धार्मिकता का चरित्र अनुग्रह से है।

धार्मिकता का आह्वान किया जाता है, लेकिन किसी तरह, हम ऐसा नहीं कर पाते हैं। और इसलिए, दिव्य योद्धा हमारे शत्रु को हराने के लिए आता है, और हम बस एक क्षण में इसके बारे में और अधिक बात करेंगे, जो तब, चरमोत्कर्ष खंड को संभव बनाता है। और हम इसे अगले सप्ताह अपने अध्ययन के समापन के रूप में देख रहे हैं, अध्याय 60 से 62 हम अगले सप्ताह देखेंगे।

आज रात, मैं चाहता हूँ कि हम इस 63 से 66 को देखें, अध्याय 56 से 59 के समानांतर। इसलिए, इसे ध्यान में रखते हुए, हमें यहां नोट्स में कुछ त्रुटियां मिली हैं। सबसे पहले, यह 63 होना चाहिए,

1 से 6, न कि 60, 1 से 6। और फिर, मैं चाहता था कि आप तेजी से अध्याय 63 से 66 को स्कैन करें।

तो, आपमें से जिन्होंने अपना होमवर्क किया, मुझे खेद है, आपको अन्य दो अध्याय पढ़ने पड़े। इसके बारे में खेद। इसलिए, जब हम समानताओं और भिन्नताओं के लिए 63 से 66 को देखते हैं, तो जो तत्काल समानता हम देखते हैं वह दिव्य योद्धा है।

और जैसा कि हम यहां एक क्षण में देखेंगे, यहां तक कि एक कविता भी है जो इनमें से प्रत्येक खंड में समान है। तो नम्बरवन दिव्य योद्धा। अब, दिलचस्प बात यह है कि इस मामले में, हमने दिव्य योद्धा के साथ निष्कर्ष निकाला।

यहां, हम दिव्य योद्धा से शुरुआत करते हैं। और इससे सामग्रियों को देखने के हमारे तरीके में थोड़ा अंतर आया। तो, यह 63, 1 से 6 में है। फिर, जब हम आगे बढ़ते हैं, 63, 7. मैं प्रभु के दृढ़ प्रेम, प्रभु की स्तुति, उन सभी के अनुसार जो प्रभु ने हमें दिए हैं, और महान का वर्णन करूंगा इस्राएल के घराने पर भलाई हुई, कि उस ने उन पर दया करके, और अपने मन की बहुतायत के अनुसार उनको अनुग्रह दिया।

क्योंकि उस ने कहा, निश्चय वे मेरी प्रजा हैं, हे बालकों, अध्याय 1, श्लोक 2 को स्मरण रखो, मैं ने ऐसे बालकों को पाला है, परन्तु ऐसे बालक जो झूठ न बोलेंगे, और वह उनका उद्धारकर्ता हुआ। उनके सारे क्लेश में उस ने कष्ट उठाया, और उसके साम्हने के दूत ने उनका उद्धार किया। अपने प्यार और दया में, उसने उन्हें छुड़ाया, उन्हें ऊपर उठाया, पुराने दिनों तक उन्हें अपने साथ रखा।

यहाँ यह आता है, श्लोक 10। क्या? लेकिन उन्होंने विद्रोह कर दिया. यहाँ हम हैं।

ईश्वर की सारी अच्छाइयों के बावजूद, उसकी करुणा के बावजूद, उसकी हिचकिचाहट के बावजूद, उसकी दया, उसकी दया के बावजूद, उन्होंने विद्रोह कर दिया। फिर हम श्लोक 11 में फिर से ईश्वर के बारे में बात करते हैं। तो यह दिलचस्प है, इस खंड में, दिव्य योद्धा का अनुसरण करते हुए, हम प्रारंभिक संकेतक के रूप में भगवान की कृपा के बारे में बात करते हैं।

परन्तु अब पद 15 पर आगे बढ़ें। स्वर्ग से नीचे दृष्टि करके अपने पवित्र और सुन्दर निवास से देख, कि तेरा उत्साह और पराक्रम कहां हैं? आपके आंतरिक अंगों की हलचल और आपकी करुणा मुझसे दूर रखी गई है। यद्यपि इब्राहीम हमें नहीं जानता, और इस्राएल हमें नहीं जानता, तौभी तू हमारा पिता है।

हे प्रभु, आप हमारे पिता हैं, प्राचीन काल से हमारा उद्धारकर्ता आपका नाम है। हे प्रभु, तू क्यों हम को अपने मार्ग से भटकाता, और हमारे मनो को कठोर कर देता है, कि हम तेरा भय न मानें? 64 से अधिक, पद 5। तू उससे मिलता है जो आनन्दपूर्वक धर्म के काम करता है, जो तेरे चालचलन में तुझे स्मरण रखता है। देख, तू क्रोधित हुआ, और हम ने पाप किया।

हम बहुत दिन से अपने पापों में फँसे हुए हैं, और क्या हम उद्धार पाएँगे? हम सब उस मनुष्य के समान हो गए हैं जो अशुद्ध है। हमारे सारे धर्मकर्म अशुद्ध वस्त्र के समान हैं। हम सब पत्ते की तरह मुरझा जाते हैं, और हमारे अधर्म हवा की तरह हमें उड़ा ले जाते हैं, इत्यादि।

तो, दिलचस्प बात यह है कि, हम अतीत में भगवान की दयालु देखभाल पर जोर देने के साथ शुरू करते हैं, और फिर विद्रोह के बारे में एक शब्द, भगवान उनकी देखभाल करना जारी रखते हैं, और अब हम बात कर रहे हैं, हे भगवान, हम धार्मिकता नहीं करते हैं, और यह आपकी गलती है क्योंकि आप हमें पश्चाताप नहीं करवाते। अध्याय 65. मैं उन लोगों द्वारा मांगे जाने के लिए तैयार था जिन्होंने मेरे लिए नहीं पूछा।

मैं उन लोगों द्वारा पाए जाने के लिए तैयार था जो मुझे नहीं खोजते थे। मैंने कहा, मैं यहां हूँ, मैं यहां हूँ, उस राष्ट्र के लिए जिसे मेरे नाम से नहीं बुलाया जाता था। मैं दिन भर उन विद्रोही लोगों की ओर हाथ फैलाता रहता हूँ जो अपनी युक्तियों के अनुसार चलने का मार्ग अच्छा नहीं करते।

ऐसे लोग जो मुझे लगातार मेरे सामने उकसाते हैं। इसके आगे। तो फिर, श्लोक 11, 65-11, तुम जो प्रभु को त्याग देते हो, जो मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाग्य के लिए मेज़ लगाते हो, और भाग्य के लिए मिश्रित शराब के प्याले भरते हो, मैं तुम्हें तलवार के लिए नियत करूँगा।

और फिर, बहुत दिलचस्प बात यह है कि श्लोक 13 और 14 में आप और मेरे सेवकों के बीच अंतर बताया गया है। मेरे सेवक तो खाएँगे, परन्तु तुम भूखे रहोगे। मेरे सेवक तो पीएँगे, परन्तु तुम प्यासे रहोगे।

मेरे सेवक आनन्द करेंगे, परन्तु तुम लज्जित होगे। दिलचस्प सवाल यह है कि आप यहां कौन हैं? हम उस बारे में बात करेंगे। तो, भगवान वादा करते हैं कि वह अपने सेवकों को आशीर्वाद देंगे, जो उनके सेवक हैं, उन लोगों के विपरीत जो सोचते हैं कि वे उनके सेवक हैं।

और फिर 65-17 में, हमारे पास कुछ ऐसा है जो बिल्कुल नया है। यहाँ अनुभाग के इस पहले भाग में ऐसा कुछ नहीं है। और वह नया स्वर्ग और नई पृथ्वी है।

देख, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी रचता हूँ। पहिली बातें स्मरण न रहेंगी, न स्मरण में आएंगी, परन्तु जो कुछ मैं उत्पन्न करता हूँ उस में आनन्दित और सर्वदा आनन्दित रहना। क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को आनन्द के लिये और उसकी प्रजा को आनन्द के लिये उत्पन्न करता हूँ।

तो, इसका अंतिम भाग इस बात पर जोर दे रहा है कि भगवान क्या करने जा रहा है। अब, रास्ते में, मैंने कैडिस को अंदर आते देखा, और कैडिस मेरी यशायाह कक्षा का ऑडिट कर रही थी जिसे मैंने इस वसंत में सेमिनरी में पढ़ाया था। मैं उसे यहां नहीं बुलाऊंगा, लेकिन उसे शायद याद होगा।

जब हम कक्षा में इस पर विस्तार से विचार कर रहे थे, तो हमने देखा कि यहाँ प्राथमिक जोर मानवीय अक्षमता पर है, और दैवीय क्षमता पर थोड़ा जोर दिया गया है। परिवर्तन यहीं समाप्त हो

गया है, मुख्य जोर दैवीय क्षमता पर है, और थोड़ा जोर मानवीय अक्षमता पर है। दोनों मामलों में कुल मिलाकर बात एक ही है।

यहूदी लोग अधर्मी हैं, लेकिन यहाँ इस उदाहरण का अनुसरण करते हुए, यदि वे चाहें, तो इसके बारे में कुछ करने की ईश्वर की क्षमता पर अधिक जोर दिया गया है। ठीक है, तो फिर, अगर हम इन चार अध्यायों, 63, 64, 65, 66 को देखें, तो पहला खंड दिव्य योद्धा है, 63, 1 से 6। दूसरा है 63, 7 से 64, 12, फिर 64, 13 के माध्यम से, हाँ, धन्यवाद, हाँ, ठीक है, और फिर 65, 2 से 25, और फिर अध्याय 66। तो, हम उन शब्दों में सोचेंगे।

64, 13, 12 पर समाप्त होता है। 12 पर समाप्त होता है। ओह, ओह, ओह, मैं समझ गया कि आप क्या कह रहे थे।

जो आप कह रहे हैं, वो मुझे समझ आ रहा है। धन्यवाद। यहाँ हैं हम।

ठीक है, तो, बड़े खंड में चार खंड हैं। ठीक है, 63, 5 को देखो। मैंने देखा, लेकिन मदद करने वाला कोई नहीं था। मैं स्तब्ध था, लेकिन संभालने वाला कोई नहीं था।

सो, मेरे ही भुजबल ने मेरा उद्धार किया, और मेरे क्रोध ने मुझे सम्भाला। वह 63, 5 है। अब, यहाँ 59, 16 है। उसने देखा कि वहाँ कोई आदमी नहीं था, और आश्चर्य किया कि वहाँ कोई हस्तक्षेप करने वाला नहीं था।

तब उसके अपने भुजबल ने उसका उद्धार किया, और उसके धर्म ने उसे सम्भाला। यह दिलचस्प है, यहाँ पर, यह उसकी धार्मिकता है जिसने उसे कायम रखा, और यहाँ यह उसका क्रोध है जिसने उसे कायम रखा। मैं सोचता हूँ, एक धार्मिक क्रोध, और एक क्रोधपूर्ण धार्मिकता।

इसलिए, मुझे लगता है कि अगर और कुछ नहीं, तो वे दो श्लोक इस बात पर मुहर लगाते हैं कि इन दोनों को एक-दूसरे के समानांतर समझा जाना चाहिए। अब, यहाँ की भाषा बहुत ही गंभीर है। यहाँ योद्धा आता है, उसके वस्त्र घुटने तक लाल रंग के हैं, और यह अंगूर का रस नहीं है।

शराब की भट्टी में कौन गया है? 63, 1. बसरा क्या है? किसी को याद है? बसरा एदोम की राजधानी है। एदोम दाखमधु के कुंड में है, और वह एदोम को रौंद रहा है, और उनका लहू उसके वस्त्रों पर बह रहा है। अब, आप जानते हैं, आप बाईं ओर के लोगों की रक्त धर्मशास्त्र की बाल्टी से भयभीत होने में मदद करना चाहते हैं, यह यहाँ है।

योद्धा अपने दुश्मनों के खून से हर तरफ बिखरा हुआ है। वह उन्हें शराब के कुंड में अंगूर की तरह रौंद रहा है। लेकिन, ये यहूदियों के दुश्मन कौन हैं? वे स्वयं, अपने स्वयं के पाप।

उनके पापों ने उन्हें हरा दिया है। एदोम अब कोई समस्या नहीं है। एदोम पर बेबीलोनियों ने कब्ज़ा कर लिया और उसे नष्ट कर दिया, और एदोमी कभी वापस नहीं लौटे।

रेगिस्तान से अरब लोग उस क्षेत्र में आ गए और न्यू टेस्टामेंट के नबातियन बन गए। इसलिए, निर्वासन से वापसी के समय एदोम अस्तित्व में नहीं है। लेकिन, जैसा कि मैंने पृष्ठभूमि नोट्स में कहा है, एदोम, यहाँ अध्याय 34 में, हाँ, भगवान के दुश्मनों का प्रतीक है।

तो, यदि यह दिव्य योद्धा वास्तव में ईश्वर की ओर से भेजा गया है, तो वह किसका खून है जो उसके कपड़ों पर बिखरा हुआ है? अपने ही। अपने ही। जो कोई पाप नहीं जानता था वह हमारे लिये पाप बन गया।

यह योद्धा अपने शत्रुओं का पाप बन गया है। वह अपने लोगों का पाप बन गया है। और ऐसा करने में, यह उसका अपना खून है जो उसके कपड़ों को ढकता है।

इसलिए, मैं फिर से इस पर जोर देने का प्रयास करना चाहता हूँ। जब हम मुक्ति, रूपांतरण और पुनर्जनन के बारे में सोचते हैं, तो यीशु पीड़ित सेवक के रूप में आते हैं। वह दुनिया के पापों को विनम्रतापूर्वक, नम्रता से अपने अंदर ले लेता है, जैसे मेमना अपने ऊन कतरने से पहले गूंगा हो जाता है।

लेकिन, जब अपने लोगों में पाप को हराने की बात आती है, तो वह पीड़ित सेवक के रूप में नहीं आते हैं। वह योद्धा के रूप में आता है। वह हमारे जीवन में पाप की शक्ति को नष्ट करने के लिए आता है।

और ये बहुत ज़रूरी है कि हम उन दोनों तस्वीरों को समझें। पीड़ित सेवक जो नम्रता से दुनिया के पापों को अपने अंदर ले लेता है और प्यार लौटाता है। और दिव्य योद्धा जो अपने लोगों में पाप पर हमला करने और उसे नष्ट करने के लिए आता है।

अपने ही खून से. क्रॉस। क्रॉस उत्तर है।

हाँ, यह उन पापों का उत्तर है जो किये गये थे। और यह हमारे जीवन में एक शक्ति के रूप में पाप का उत्तर है। दुख की बात है कि उत्तरी अमेरिकी ईसाई धर्म प्रचार में हमने इसे केवल उन पापों का उत्तर बना दिया है जो अतीत में किए गए हैं।

इसमें उन पापों के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है जो ईसाई अब करते हैं। दुख की बात है। लेकिन यह गलत है।

क्रूस, रक्त, उन पापों के लिए है जो किए गए हैं। और यह अब हमारे जीवन में पाप की शक्ति को हराना है। और यह अच्छी खबर है।

जॉन, क्या इससे संबंधित कोई महत्व है, कि अध्याय 59 में, वह दूसरे व्यक्ति के रूप में बोलता है, और अध्याय 63 में, पहले व्यक्ति के रूप में? मुझे भी ऐसा ही लगता है। मुझे लगता है ऐसा है। मुझे नहीं पता कि आप सभी ने प्रश्न सुना है या नहीं।

59 में, यह दूसरा व्यक्ति है. या तीसरा भी. 63 में योद्धा स्वयं बोल रहा है.

और सवाल यह है कि क्या यह महत्वपूर्ण है? और मुझे लगता है यह है. मुझे लगता है कि यह ध्यान केंद्रित करने वाला है, यह इसे अधिक प्रासंगिक, अधिक स्पष्ट, अधिक ठोस बना रहा है।

हाँ। अच्छा अवलोकन. ठीक है।

तो फिर, चलिए आगे बढ़ते हैं। 63.7 से एक कविता शुरू होती है जो 64.12 तक चलती है। जब हम उस कविता को देखते हैं, 63.7 से 64.12, और फिर, यदि आपने ऐसा नहीं किया है, तो बहुत देर हो चुकी है। लेकिन, मैं यहां कुछ बातें बता देना चाहता हूं।

हमारे पास यह याद करने की शुरुआत है कि भगवान अतीत में हमारे प्रति कितने दयालु रहे हैं। उन्होंने हमारा नेतृत्व कैसे किया है. फिर, 63.15 से शुरू होकर, आपके पास ये अपीलें आनी शुरू हो जाती हैं।

स्वर्ग से नीचे दृष्टि करके देखो। तुम्हारा उत्साह और पराक्रम कहाँ हैं ? मेरा मतलब है, भगवान, आपने अतीत में हमारे लिए यह सब किया है। अब आप ऐसा क्यों नहीं कर रहे? अध्याय 64 का श्लोक 1.

ओह, ऐसा होता कि तू आकाश को फाड़कर नीचे आ जाता, और पहाड़ तेरे आने से कांप उठते। भगवान, हम इसे पूरा नहीं कर रहे हैं। अगर आप आ जाएं तो सबकुछ ठीक हो जाएगा।

64.8. अब, हे भगवान, आप हमारे पिता हैं। हम मिट्टी हैं, तुम हमारे कुम्हार हो। हम आपके हाथ का काम हैं।

हे भगवान, इतना अधिक क्रोधित मत होइये। याद रखें अधर्म हमेशा के लिए नहीं. कृपया, देखिए, हम सभी आपके लोग हैं।

तो, जो विषय यहां चल रहा है वह लोगों की यह पुकार है कि भगवान उन्हें धर्मी बनाने के लिए कुछ करेंगे। लेकिन अंतर्निहित टिप्पणी यह है कि, यह उसकी गलती है कि हम धर्मी नहीं हैं। इसलिए, लोग भगवान से प्रकट होने के लिए कह रहे हैं।

तुम बहुत दूर हो, यहाँ आओ। और, अपील का आधार यह है, हम इब्राहीम के बच्चे हैं, भगवान। तुम हमारे आभारी हो।

बहुत दिलचस्प। इसके बजाय कि उसके लोग उस पर कुछ कर्ज़दार हों, वह उनका कुछ कर्ज़दार है, क्योंकि उसने इब्राहीम को चुना। तो फिर ये चुनाव का मुद्दा.

चुनाव का मतलब है कि हमने भगवान पर एक तरह का ताला लगा दिया है। चुनाव का मतलब है कि भगवान का हम पर कुछ कर्ज़ है। इन लोगों, इन विदेशियों और इन हिजड़ों के विपरीत, जिनके प्रति कथित तौर पर ईश्वर का कोई ऋण नहीं है।

तो, फिर से, यह जोर परमेश्वर के लोगों की धार्मिकता करने में असमर्थता पर है। अब, यहाँ पर, अधिक समझ है, और हमें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। हम भगवान के लोग हैं।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि। यहाँ, इस बात की अधिक भावना है कि हे भगवान, हम जिस तरह से व्यवहार कर रहे हैं, हमें वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। और, यह आपकी गलती है कि हम नहीं हैं।

ठीक है, चलिए अब वापस चलते हैं और इसे थोड़ा और विस्तार से देखते हैं। 63, सात से 14 तक। इस छंद का मुख्य विषय क्या है? भगवान को झिझक हुई।

मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है, मेल। मुझे लगता है कि यह पहली ही कविता में है। जो कुछ उस ने हमें दिया है, उसके अनुसार मैं यहोवा की झिझक, और उसकी स्तुति का वर्णन करूंगा।

हां, यहां एक श्रेष्ठ से एक निम्न की अवांछनीय भक्ति और कृपा है जिसे भगवान ने अपने लोगों के सामने प्रदर्शित किया है। अब, ध्यान दें कि इस श्लोक में आत्मा या पवित्र आत्मा के कितने संदर्भ हैं। ठीक है, मेल तीन कहता है।

श्लोक 11, वह कहाँ है जिसने उनके बीच में अपना पवित्र आत्मा डाला? श्लोक 14, यहोवा की आत्मा ने उन्हें तराई में जाने वाले पशुओं के समान विश्राम दिया, परन्तु मैं विश्वास करता हूँ, कि उस से पहिले भी एक है। चलो देखते हैं। 10 में, हाँ, उन्होंने विद्रोह किया और उसकी पवित्र आत्मा को दुःखी किया।

अब, यहां कोई सही उत्तर नहीं है, लेकिन आपको क्या लगता है कि इस परिच्छेद में पवित्र आत्मा पर इतना जोर क्यों दिया गया है? परमेश्वर अपनी आत्मा में उनके साथ रहा है और वे मानते हैं कि उसकी आत्मा उनके साथ उसकी उपस्थिति है। मुझे लगता है कि यह एक अच्छी संभावना है। मुझे लगता है कि वे पवित्र आत्मा की आवश्यकता को पहचानते हैं, जब वे यात्रा पर थे, उससे अलग, व्यक्तिगत रूप से उनमें होना, व्यक्तिगत रूप से संबंध बनाना।

हां, मुझे लगता है कि यह एक वास्तविक संभावना है, कि वे पुराने नियम में चल रहे इस बढ़ते विषय को पहचान रहे हैं। भगवान, हम अपने टोरा से प्यार करते हैं, लेकिन हम इसे बनाए नहीं रखते हैं। इसलिए वह हर जगह हमारी निंदा करती है।

लेकिन भगवान, हमने कुछ ऐसे लोगों को देखा है जिनमें एक अलग आत्मा काम कर रही है। क्या कोई संभावना है कि आप उस भावना को हम सभी में डालने और हमें टोरा रखने में सक्षम बनाने के इच्छुक होंगे? और भगवान कहते हैं मैंने सोचा था कि तुम कभी नहीं पूछोगे। यही मेरी योजना रही है।

इसलिए मुझे लगता है, और फिर, मैं इसे परिच्छेद से साबित नहीं कर सकता, लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत, बहुत संभव है कि यही हो रहा है, कि वे अब दुनिया में पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति सचेत हैं। और जानते हैं कि उन्हें उनके नेतृत्व की आवश्यकता है, उन्हें उनके मार्गदर्शन की

आवश्यकता है, उन्हें उनकी उपस्थिति की आवश्यकता है। हम उसकी आत्मा के विरुद्ध विद्रोह करते हैं।

वह कहाँ है जिसने उनके बीच अपना पवित्र आत्मा डाला? प्रभु की आत्मा ने उन्हें विश्राम दिया। इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही वास्तविक संभावना है कि जो हो रहा है, वह यशयाह है, जैसा कि वह लोगों के लिए बोलता है, कहता है, हमें उस पवित्र आत्मा की आवश्यकता है। वह पवित्र आत्मा जो हमें मिस्र से बाहर ले आई, वह पवित्र आत्मा जो हमें वादा किए गए देश में ले आई, हमें अपने भीतर नए और विशेष तरीकों से उसकी आवश्यकता है।

ठीक है, 63, 15 से 19। लोग भगवान को किस लिए दोष दे रहे हैं? उनके लिए न कोई जोश, न कोई जुनून. उसने उनके हृदय कठोर कर दिये हैं।

ये लोग अच्छे कैल्विनवादी हैं। यह निर्दयी है, लेकिन... उह-हह, हाँ। मम-हम्म, मम-हम्म, मम-हम्म, हाँ।

जब आप यहां थे तो हमारे दिल कोमल थे, और फिर आप चले गए, और हमारे दिल कठोर हैं। तो, यह किसकी गलती है? विशेषकर, चूँकि आपने हमें चुना है। हाँ, हाँ, चूँकि आपने शुरुआत में हमें चुना था, अगर आप यहाँ नहीं हैं तो यह आपकी गलती है।

बहुत अद्भुत। हाँ। तो, श्लोक 18 और 19, वे क्या कह रहे हैं? मम-हम्म.

कि वह अपने पवित्र स्थान में था, और अब चला गया है। हाँ। मम-हम्म, मम-हम्म, हाँ।

कुछ समय तक तुम अपने पवित्र स्थान में थे, अब तुम चले गए, और हम उन लोगों के समान हैं जिन पर तुमने कभी शासन नहीं किया। रूथ का कहना है कि हम इसी रास्ते पर जा रहे हैं। और आपने अपनी विश्वसनीयता खो दी है।

मम-हम्म. हर कोई चला गया है. हां।

ठीक है, फिर आगे बढ़ाएँ, 64, 1 से 12। श्लोक 1 से 5 में, अपील क्या है? वे क्या पूछ रहे हैं? वह परमेश्वर नीचे आएगा, वह परमेश्वर अपनी उपस्थिति प्रकट करेगा। और पद 2 में किस प्रयोजन के लिए? हाँ, अपने विरोधियों पर अपना नाम प्रगट करो, कि जाति जाति के लोग तेरे साम्हने कांप उठें।

ठीक है, कम से कम उनका ध्यान खुद से थोड़ा हट रहा है। लेकिन यह मुख्य रूप से है, हमारे लिए अच्छे काम करो ताकि हमारे दुश्मन हिल जाएँ। यहाँ बहुत अधिक मिशनरी आंदोलन नहीं है, है ना? लेकिन कम से कम हम कह सकते हैं, हां, ऐसा है ताकि दुनिया आपको जानेगी।

कम से कम हम इतनी दूर तक तो जा सकते हैं, और यह अच्छा है। प्रश्न कहीं? कोई कुछ कहना चाहता है. आपने परमपुरुष को क्यों दिया? हां।



क्यों? आपने हमें विकल्प क्यों दिये? यह तुम्हारी गलती है। हां। उह... हाँ।

कुछ हफ़्ते पहले डेविड रबन ने मुझे एक कार्टून दिया था। और यह स्पष्ट है कि भगवान और एक देवदूत बादल पर खड़े होकर पृथ्वी को देख रहे हैं। और देवदूत कह रहा है, ठीक है, यदि आप चाहते हैं कि यह संवादात्मक हो, तो आपको उन्हें स्वतंत्र इच्छा देनी होगी।

हां। हां। यही समस्या थी।

श्लोक 5. ध्यान दें कि वे क्या कह रहे हैं? हाँ। हाँ। तो, उन्हें सही दृष्टिकोण मिल गया है।

तुम आनन्दपूर्वक, उस से मिलो जो आनन्दपूर्वक धर्म के काम करता है, और जो तेरे चालचलन में तुझे स्मरण करते हैं। हाँ। तो, हम समझते हैं, भगवान, कि आप उन लोगों के जीवन में काम करते हैं जो धार्मिकता करते हैं।

परन्तु हे परमेश्वर, तू क्रोधित था, और हम ने पाप किया, हम बहुत दिन से पाप में फंसे हुए हैं, और क्या हम उद्धार पाएंगे? हम सब उस मनुष्य के समान हो गए हैं जो अशुद्ध है। तो, उन छंदों के अनुसार, भगवान को कार्य क्यों करना चाहिए? ठीक है। और उसके समान कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।

हम अपने आप को नहीं बचा सकते. अब फिर से, मैं आपको याद दिलाता हूँ, हम 40 से 55 के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। यह मोक्ष के बारे में है।

यह आपके पापों के परिणामों से मुक्ति के बारे में है। ये लोग अब वापस ज़मीन पर आ गए हैं. वे, उद्धारण, बचाए गए हैं।

लेकिन वे धार्मिक जीवन नहीं जी रहे हैं। तो फिर, श्लोक 8 से 12 में, आप हमारे पिता हैं। श्लोक 9. हम आपके लोग हैं।

तेरे पवित्र नगर जंगल हैं। हमारा सुन्दर पवित्र घर आग से जल गया है। हे प्रभु, क्या तू अपने आप को इन बातों पर रोकेगा? क्या तुम चुप रहोगे और हमें इतना भयानक कष्ट दोगे? ठीक है।

आप हमारे पिता हैं. हम आपके लोग हैं. यह तुम्हारी भूमि है जो तुमने हमें दी है।

यह आपका घर है। ज़मीन, लोग और घर. वे सभी गड़बड़ी में हैं।

तो आप अभिनय क्यों नहीं कर रहे? तो, भगवान कैसे प्रतिक्रिया देता है? 65 के श्लोक 1 और 2 में। मैं अपने आप को उन लोगों के सामने प्रकट करता हूँ जो मुझे खोजते हैं। अब यह उन सभी चीज़ों के बारे में क्या कहता है जिनके बारे में वे यहां पिछले अनुभाग में बात कर रहे हैं? वे बहुत अधिक प्रयास नहीं कर रहे होंगे.

नहीं, उन्हें सही दृष्टिकोण मिला। उन्हें कदम उठाना होगा। शायद वे स्वयं के बजाय ईश्वर को दोष दे रहे हैं।

ठीक है। ठीक है। ठीक है।

ठीक है। मुझे लगता है कि यही इसके मूल में है। हम भगवान को कैसे खोजें? और पहली बात यह है कि अपनी समस्याओं के लिए उसे दोष देना बंद करें।

बिल्कुल। मम-हम्म. मम-हम्म.

मम-हम्म. परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए तैयार रहें। हाँ, बिल्कुल।

जाहिर है, 65:1 से यह गंभीरता से नहीं था। यह था, यह था, उन्होंने कहा कि वे भगवान की इच्छा पूरी करने के इच्छुक थे, लेकिन वे नहीं थे। ऐसे में, मुझे लगता है, वे आस्था का कदम उठाने को तैयार नहीं थे।

वे यहां खड़े होकर कह रहे हैं, ठीक है भगवान, आप मुझे हटाइये और मैं हटूंगा। और भगवान कहते हैं नहीं. कहना मुश्किल है।

यह कहना कठिन है, सिवाय उनके विरुद्ध ईश्वर के आरोपों के आधार पर। कि तुम वास्तव में मुझे नहीं खोज रहे थे। आपने कहा था कि आप थे, लेकिन आप नहीं थे।

खैर, वे कहते हैं कि वह नहीं है। वे उस पर आरोप लगा रहे हैं कि उसने उन्हें छोड़ दिया है और इसलिए वे बेवफा हैं और बेवफाई कर रहे हैं। और भगवान मूल रूप से कह रहे हैं, मैंने तुम्हें कभी नहीं छोड़ा।

क्योंकि वे वही करते रहना चाहते थे जो वे चाहते थे। वे अब भी अपनी इच्छा चाहते थे। ज़रूर, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है।

वे अपना रास्ता चाहते थे और वे मूल रूप से कह रहे थे, हाँ भगवान, अगर तुमने मुझे बनाया तो मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। खैर, अब हम बिल्कुल यही कर रहे हैं। आपको यह मिला।

हाँ। हाँ, उन्हें मूर्तियों की याद आएगी। ठीक है।

ठीक है, ठीक है, मुझे लगता है कि यह संभव है। मैं इसे पाठ में स्पष्ट रूप से नहीं देखता, लेकिन मैं निश्चित रूप से सहमत हूँ कि यह संभव है। एक वास्तविक विनम्रता.

मैं भी सोचता हूँ, और इसका संबंध उसी से है जिसके बारे में मैं पहले बात कर रहा था, मैरी जो अभी उठा रही थी। परिवर्तन की उनकी इच्छा कितनी गहरी थी? और मुझे लगता है कि यह इस पहले वाले से संबंधित है। क्या वे सिर्फ भगवान को दोष देना चाहते हैं? ठीक है, भगवान, हम एक गड़बड़ हैं और यह आपकी गलती है।

या क्या वे वास्तव में चाहते हैं कि ईश्वर उन्हें अधर्म के इन पैटर्न से मुक्ति दिलाए और वास्तविक विनम्रता के साथ ईश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए उसके पास आएँ? हाँ, हाँ, हाँ, हाँ। यदि आप विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं और बाहर निकलते हैं, तो यह वहाँ है। हाँ, हाँ, हाँ।

अरे हाँ, मुझे लगता है कि आप इसे सदियों से पुनरुद्धार के पैटर्न में देख सकते हैं। यह आम तौर पर एक व्यक्ति या लोगों का एक छोटा समूह होता है जो वास्तव में इसके बारे में भावुक होता है। हाँ हाँ हाँ।

ठीक है, अब, श्लोक तीन और उसके बाद को देखें। भगवान का आरोप. वे लोग जो बार बार मेरे साम्हने मुझे चिढ़ाते हैं, बागों में बलि चढ़ाते हैं, ईंटों पर चढ़ावा चढ़ाते हैं, कब्रों में बैठते हैं, गुप्त स्थानों में रात बिताते हैं, जो सूअर का मांस खाते हैं।

उनके बर्तनों में दूषित मांस का शोरबा है, जो कहते हैं, अपने पास रहो, मेरे निकट मत आओ, मैं तुम्हारे लिये बहुत पवित्र हूँ। क्या आपको लगता है कि वे सचमुच ऐसा कर रहे थे? ठीक है, यह अगला प्रश्न है। यदि वे नहीं थे, तो इसका क्या मतलब था? यदि वे वास्तव में ये काम नहीं कर रहे थे तो इस प्रकार की भरी भाषा का उपयोग क्यों करें? यह उनके आंतरिक रवैये का प्रतिबिंब हो सकता है।

मैं उन सर्वाधिक पवित्र व्यक्तियों में से एक हूँ जिनसे आप कभी मिले होंगे। मैं हर दिन भक्ति करता हूँ। मैं हर रविवार को दो बार चर्च जाता हूँ।

उसकी कोशिश करो। मैं झूठ नहीं बोलता, मैं चोरी नहीं करता. मैं अक्सर अपनी पत्नी को नहीं पीटता।

मैं एक पवित्र व्यक्ति हूँ, और यदि आप लोग भी मेरी तरह कठिन प्रयास करें, तो आप भी मेरे समान पवित्र हो सकते हैं। जो लोग बागों में बलि चढ़ाते, ईंटों पर चढ़ावा चढ़ाते, कब्रों पर बैठते, गुप्त स्थानों में रात बिताते, सूअर का मांस खाते, और उनके बर्तनों में दूषित मांस का शोरबा रखते हैं, जो लोग मेरे साम्हने निरन्तर मुझे चिढ़ाते हैं, जो कहते हैं, रखो, अपने लिए, मेरे पास मत आओ, मैं तुम्हारे लिए बहुत पवित्र हूँ। ये मेरी नाक में धुंआ, और आग है जो दिन भर जलती रहती है।

मुझे लगता है कि यह बहुत संभव है कि वे सभी सही चीजें कर रहे थे। और भगवान कहते हैं, भले ही इससे आपका भला होने वाला है, आप चूहे का शोरबा भी खा रहे होंगे। आपकी पवित्रता मेरे नथुनों में दुर्गंध है।

मैं जो कह रहा हूँ वह तुम समझ रहे हो? ऐसा हो सकता है कि भगवान कह रहे हों, वे सभी अच्छे काम जो तुम कर रहे हो, अच्छी चीजें जिनकी आज्ञा दी गई है, वे सड़े हुए हैं क्योंकि तुम उन्हें अपने लिए कर रहे हो। आप भगवान की तरह नहीं बनना चाहते, आप पवित्र बनना चाहते हैं। अब आप कहते हैं, एक मिनट रुकें, पवित्र तो पवित्र है, है ना? नहीं - नहीं।

वहाँ पवित्रता है, और वहाँ पवित्रता है। और यह एक दुर्गंध है. क्योंकि यह सब मेरे बारे में है.

यह सब मेरे बारे में है . और मुझे संदेह है, फिर से, यहाँ इस तरह की बहुत सारी चीज़ें चल रही हैं। अध्याय 66 पर नजर डालें।

पद 2 का दूसरा भाग। यही वह है जिस पर मैं दृष्टि डालूँगा, वह जो आत्मा में नम्र और खेदित है। हमने इसे अध्याय 57 में देखा। मैं ऊँचे और पवित्र स्थान में और उसके साथ रहता हूँ जो दीन और खेदित हृदय वाला है।

जो बैल का वध करता है वह मनुष्य के वध करने वाले के समान है। वह जो मेमने की बलि देता है, जैसे वह जो कुत्ते की गर्दन तोड़ता है। वह जो अन्नबलि चढ़ाता है, उस के समान जो सूअर का लोह चढ़ाता है।

जो लोबान की यादगार भेंट चढ़ाता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो मूर्ति को आशीर्वाद देता है। इन्होंने अपना अपना मार्ग चुन लिया है, और इनका मन अपने घृणित कामों से प्रसन्न होता है। अब क्या आप देख रहे हैं कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ? वे वास्तव में एक आदमी को नहीं मार रहे हैं, वे एक बैल की पेशकश कर रहे हैं।

लेकिन यशायाह कहता है, भले ही इससे आपका भला होने वाला हो, आप एक आदमी को मार भी सकते हैं। वे निश्चित रूप से किसी कुत्ते की गर्दन तोड़कर वेदी पर नहीं रख रहे हैं, लेकिन भगवान कहते हैं कि आप भी ऐसा कर सकते हैं। यह सब आपके बारे में है और आप ईश्वर को अपने लिए जो चाहते हैं उसे करने के लिए प्रेरित करने के आपके प्रयासों के बारे में है।

और यह बेकार है. अब मेरी बात सुनो. क्या मैं मानता हूँ कि दैनिक भक्ति अत्यंत महत्वपूर्ण है? मैं निश्चित रूप से कर दूँगा।

क्या मैं मानता हूँ कि रविवार को दो बार भी चर्च जाना अच्छी बात है? मैं इसे पूरे मन से करता हूँ। क्या मैं मानता हूँ कि हमें अछूत नैतिकता वाला व्यक्ति होना चाहिए? हां हां हां। लेकिन मैं कहता हूँ, अगर यह सब मेरे लिए, मेरी उपलब्धियों के लिए, मेरी अपनी छवि के लिए है, तो यह अच्छी बात नहीं है।

तो, जैसा कि रूथ ने शुरू में कहा, सब कुछ रवैया है। ठीक है। खैर, यहां हमारा समय हमसे दूर होता जा रहा है।

सुनना चाहता था उसमें से अधिकांश हमने कवर कर लिया है । अब देखो। तो, वह आपके और नौकरों के बारे में बात करता है।

और मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आप उन लोगों को संदर्भित करते हैं जो अपनी धार्मिकता पर गर्व करते हैं, और यह वास्तव में अधर्म है, उन लोगों के विपरीत जो विनम्र और निराश हैं, जो अपनी ज़रूरत को जानते हैं और सही तरीकों से भगवान की तलाश कर रहे हैं।

अब, अध्याय 65 पर जाएं जहां वह इस बारे में बात करता है कि भगवान आपके विपरीत मेरे सेवकों को कैसे आशीर्वाद देंगे। श्लोक 16.

ताकि जो कोई देश में अपने आप को आशीर्वाद दे वह सत्य के परमेश्वर के द्वारा अपने आप को आशीर्वाद दे। जो कोई देश में शपथ खाएगा, वह सत्य के परमेश्वर की शपथ खाएगा, क्योंकि पहिली विपत्तियां भूल गई हैं, और मेरी आंखों से ओझल हो गई हैं। क्योंकि देखो, मैं नये स्वर्ग बनाता हूँ।

अब, याद रखें, for किस संबंध का संकेत देता है? औचित्य, और वह क्या है? ठीक है, आपके पास प्रभाव है, और कारण का परिचय देता है। तो, दूसरे शब्दों में, यह नया आकाश और नई पृथ्वी प्रभाव का एक कारण है। लोग सत्य के परमेश्वर द्वारा स्वयं को आशीर्वाद क्यों देंगे? वे कसम क्यों खाएंगे? क्योंकि मैं नया आकाश और नई पृथ्वी बनाने जा रहा हूँ।

अब, यहाँ मेरा प्रश्न एक महत्वपूर्ण है। परमेश्वर के वादों को ध्यान में रखते हुए स्वर्ग क्यों आवश्यक है? पुराने नियम में, आपके पास निर्विवाद रूप से अनन्त जीवन या नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसका लगभग सारा ध्यान इसी जीवन पर केंद्रित है।

यदि आप इस जीवन को भगवान के तरीके से जीते हैं, तो कुछ निश्चित आशीर्वाद हैं जो आवश्यक रूप से आपके साथ आएंगे, और यदि आप भगवान के तरीके से नहीं जीते हैं, तो कुछ निश्चित शाप हैं जो आवश्यक रूप से आपके पीछे आएंगे, और यही वह है। अब, यदि यह सच है, तो स्वर्ग की आवश्यकता क्यों है? स्वर्ग क्यों आवश्यक है? क्योंकि उन्हें इन मूल तत्वों से परे भी कुछ देखना है। और क्या? यह कहने की आवश्यकता है कि मोक्ष की दृष्टि से वह वस्तु कैसी दिखने वाली है।

खैर, सितारे. हाँ। हाँ।

हाँ। हाँ। दान? क्या यह संभव है कि उनके कार्यों के ऐसे परिणाम आए हों जो इस जीवन में घटित होने की आवश्यकता हो, लेकिन भगवान को अंततः अपना वादा पूरा करने के लिए, वह इस तथ्य को नहीं बदल सकते कि परिणाम इस जीवन में आने ही हैं, लेकिन वह बना सकते हैं उनके लिए एक ऐसा जीवन जिसमें वादा परे पूरा होता है।

हाँ। हाँ। स्पष्ट तथ्य यह है कि ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो धार्मिक जीवन जीते हैं जिन्हें यहां बहुत अधिक भौतिक आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता है, और ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो घटिया जीवन जीते हैं जिन्हें हर जगह आशीर्वाद मिलता है।

एक वास्तविक अर्थ यह है कि यदि ईश्वर को अपने वादों को पूरा करना है कि उसके द्वारा सशक्त, उसके द्वारा सक्षम की गई धार्मिकता का परिणाम आशीर्वाद होगा तो स्वर्ग आवश्यक है। कोई अगर, कोई और, कोई परंतु नहीं। दुष्टता का परिणाम शाप होगा।

कोई अगर, कोई और, कोई परंतु नहीं। यदि यह जीवन ही सब कुछ है, तो क्या यह हमेशा इसी तरह से काम नहीं करता है, है ना? हमने सृष्टि को बहुत नुकसान पहुंचाया है। ओह, बिल्कुल.

बिल्कुल। ताकि स्वर्ग, अनन्त जीवन और अगली दुनिया, परमेश्वर के वादों के प्रकाश में एक आवश्यकता बन जाए। और इसका मतलब है कि आप और मैं अब ईमानदारी से जी सकते हैं, और अगर हमें इस जीवन में कोई बड़ा भुगतान नहीं मिलता है, तो यह ठीक है, क्योंकि भगवान अपने वादे निभाने जा रहे हैं।

यदि कोई स्वर्ग नहीं है, तो आप और मैं, लड़के, बेहतर होगा कि हम जितना प्राप्त कर सकते हैं उतना प्राप्त करें। क्योंकि जैसा कि उस आदमी ने कहा था, जब आप रोवर की तरह मरते हैं, तो आप एक ही बार में मरते हैं और आप पूरी तरह से मर जाते हैं। लेकिन स्वर्ग कहता है, नहीं, हम अब इस विश्वास के साथ ईश्वर के प्रति वफादारी में रह सकते हैं कि वह अपने वादे निभाएगा।

ठीक है। मुझे अध्याय 66 के बारे में बस एक शब्द कहने दीजिए और मैं आपको जाने दूंगा। कई मायनों में, जैसा कि मैंने पाठ में कहा, अध्याय 66 कुछ हद तक अध्याय 1 के समान है। अध्याय 1, यदि आपको याद है, और मुझे उम्मीद नहीं है कि आप ऐसा करेंगे, लेकिन आपको, वैसे भी, अध्याय 1 बीच-बीच में आगे-पीछे होता रहता है। निर्णय और आशा।

यहाँ अध्याय 66 में भी यह वैसा ही है। यह आगे-पीछे होता रहता है। और यह समाप्त होता है, और मैं चाहता हूँ कि हम इस अंत को देखें और फिर हम चलें।

श्लोक 17. जो लोग अपने आप को पवित्र करते और शुद्ध करते हैं, कि बारियों में जाएं, और बीच में एक के पीछे हो लें, और सूअर का मांस और घृणित वस्तु और चूहे खाएंगे, यहोवा की यही वाणी है। अब यह दिलचस्प है कि वह बगीचे की बात सीधे अध्याय 1 से बाहर आती है। क्योंकि मैं उनके कार्यों और उनके विचारों को जानता हूँ, और सभी राष्ट्रों और भाषाओं को इकट्ठा करने का समय आ रहा है, और वे आएंगे और मेरी महिमा देखेंगे, और मैं एक स्थापित करूँगा उनके बीच में चिन्ह दिखाऊँ, और उन में से मैं तर्शीश, पूल, लोद और धनुष खींचनेवाले अन्यजातियों के पास बचे हुएों को भेजूँगा, और तूबल और यावान के पास, और दूर दूर के समुद्रतटों में जिन्होंने न मेरा यश सुना, और न मेरी महिमा देखी है। और वे मेरी महिमा का वर्णन करेंगे।

ध्यान दें कि महिमा यहाँ कितनी बार दोहराई जाती है। कावोद, ईश्वर की वास्तविकता, ईश्वर का महत्व, ईश्वर का वजन। वे राष्ट्रों के बीच मेरी महिमा का प्रचार करेंगे।

वे तुम्हारे सब भाइयों अर्थात् यहूदियों को सब जातियों में से घोड़ों, रथों, कूड़ेदानों, खच्चरों, और सांझ पर चढ़ाकर यहोवा की भेंट के लिथे मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम पर ले आएंगे। अध्याय 2 को स्मरण रखो, सब जातियां कहती हैं, आओ हम यहोवा के भवन के पर्वत पर चढ़ें, जिस प्रकार इस्राएली आपके अन्नबलि को शुद्ध पात्र में यहोवा के भवन में लाते हैं। और उनमें से कुछ, और वस्तुतः सभी टिप्पणीकार इस बात पर सहमत हैं कि यह अन्यजातियों को संदर्भित करता है, मैं याजकों और लेवियों को लूँगा, प्रभु कहते हैं।

यहोवा की यह वाणी है, जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी जो मैं बनाऊँगा वह मेरे साम्हने बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम नये चांद से लेकर नये चांद तक, और सब्त् से सब्त् के दिन तक सब प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत् करने को आया करेंगे। प्रभु की घोषणा है।

अब यशायाह तो यशायाह है, वह यहीं समाप्त नहीं हो सकता। हे भगवान, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

अंत में हर कोई बच जाएगा। और वे बाहर जाकर उन मनुष्यों की लोथों पर दृष्टि करेंगे जिन्होंने मुझ से बलवा किया है, क्योंकि उनके कीड़े न मरेंगे, और न उनकी आग बुझेगी, वे सब प्राणियोंके लिये घृणित ठहरेंगे। ठीक है।

ठीक है। पसंद। पसंद।

सही चुनाव करो। ठीक है। अगले सप्ताह, हम उस मध्य भाग को देखेंगे, उठो, चमको, तुम्हारा प्रकाश आ गया है, और प्रभु की महिमा तुम पर उभरी है।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट और यशायाह की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 29, यशायाह अध्याय 60 से 62 है।